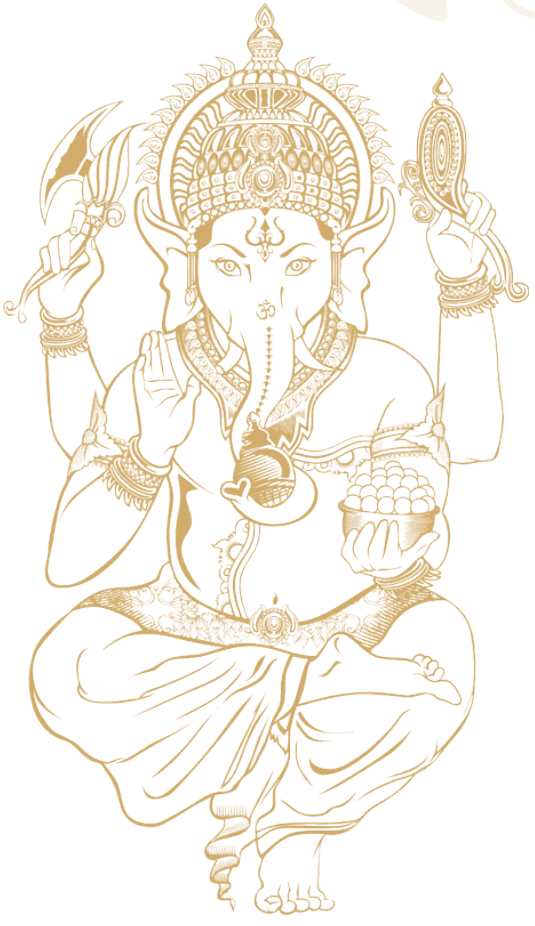

Gaurav

Ms.Jaie Bhavsar

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119000402

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
27/05/1997	जन्म तिथि	14/08/2000
मंगलवार	दिन	सोमवार
घंटे 16:05:00	जन्म समय	07:05:00 घंटे
घटी 25:32:53	जन्म समय(घटी)	02:14:11 घटी
India	देश	India
Sakri	स्थान	Parli Vaijnath
20:59:00 उत्तर	अक्षांश	18:53:00 उत्तर
74:19:00 पूर्व	रेखांश	76:36:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:32:44	स्थानिक संस्कार	-00:23:36 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:51:50	सूर्योदय	06:04:41
19:08:07	सूर्यास्त	18:51:21
23:49:13	चित्रपक्षीय अयनांश	23:51:42

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
चन्द्र 4वर्ष 4मा 15दि	02:15:35	तुला	लग्न	सिंह	10:48:18	चन्द्र 6वर्ष 3मा 1दि
राहु	12:21:17	वृष	सूर्य	कर्क	27:42:50	राहु
12/10/2008	17:29:51	मक	चंद्र	मक	14:59:47	14/11/2013
12/10/2026	27:41:30	सिंह	मंगल	कर्क	14:31:47	15/11/2031
राहु 25/06/2011	17:43:34	मेष	बुध	कर्क	19:15:37	राहु 28/07/2016
गुरु 17/11/2013	27:49:37	मक	गुरु	वृष	14:01:42	गुरु 21/12/2018
शनि 23/09/2016	26:42:19	वृष	शुक्र	सिंह	15:09:20	शनि 27/10/2021
बुध 13/04/2019	23:04:38	मीन	शनि	वृष	06:21:08	बुध 16/05/2024
केतु 30/04/2020	02:06:37	कन्या व	राहु व	कर्क	00:41:19	केतु 03/06/2025
शुक्र 01/05/2023	02:06:37	मीन व	केतु व	मक	00:41:19	शुक्र 03/06/2028
सूर्य 25/03/2024	14:46:16	मक व	हर्ष व	मक	24:52:17	सूर्य 27/04/2029
चन्द्र 24/09/2025	05:58:00	मक व	नेप व	मक	10:51:38	चन्द्र 27/10/2030
मंगल 12/10/2026	10:21:19	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	16:18:12	मंगल 15/11/2031

लग्न-चलित

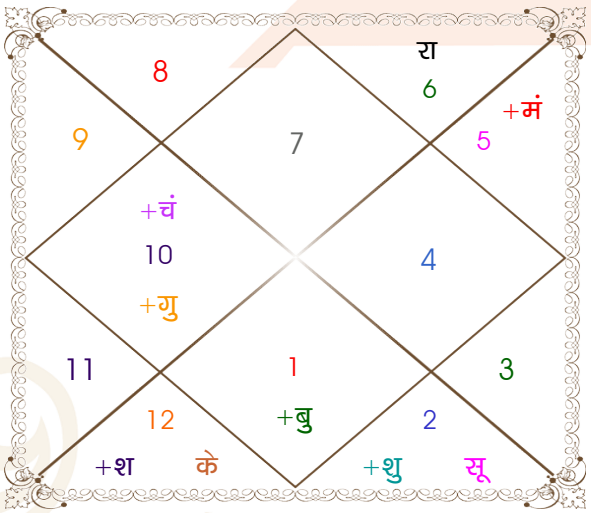

लग्न-चलित

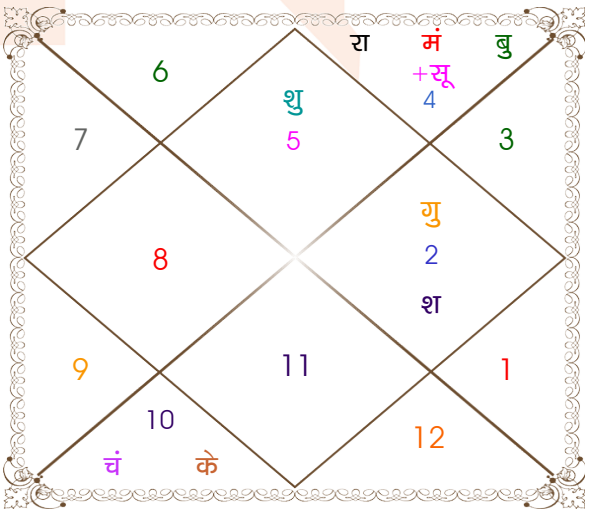

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	वानर	वानर	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	शनि	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मकर	मकर	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.00		

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि ळंनतंअ का नक्षत्र श्रवण है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि डेण्श्रंपम ठींअेंत का नक्षत्र श्रवण है।

ळंनतंअ का वर्ग मार्जार है तथा डेण्श्रंपम ठींअेंत का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ळंनतंअ और डेण्श्रंपम ठींअेंत का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

ळंनतंअ मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

डेण्श्रंपम ठींअेंत मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में द्वादश भाव में धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल डेण्श्रंपम ठींअेंत कि कुण्डली में द्वादश भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डेण्श्रंपम ठींअेंत कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।

न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु डेण्श्रंपम ठींअेंत कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु ळंनतंअ कि कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि ळंनतंअ कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ळंनतंअ तथा डेण्श्रंपम ठींअेंत में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।